Reviews of Literature
Volume 1 , Issue 8 / March 2014 ISSN:-2347-2723

अलका सरावनी: सामाजीक आर्थिक राजकीय एवं सांस्कृतिक परिवेश

सुनिता क्षीरसागर

असिस्टंट प्रोफेसर, एस. के. सोमया महाविद्यालय

सारांष:

सामाजिक परिवेश :–

समाज व्यक्तियों का वह समूह है, जिसका निर्माण कुछ विशिष्ट उद्देश्यों को ध्यान में रखकर किया जाता है। यह उद्देश्य व्यक्तिपरक न होकर आवश्यक रूप से सार्वजनिक होते हैं। समाज का उत्तरदायित्व होता है कि वह व्यक्ति–व्यक्ति के बीच पारस्परिक सहयोग का भाव विकसित करते हुए उनमें एकता, शांति और सौहार्द स्थापित करे जिससे सभी सामाजिकों की रक्षा और विकास का मार्ग प्रशस्त हो सके।

INTRODUCTION:

अतीत साहित्यकार को अनुभव प्रदान करता है, भविष्य उसमें आशा का संचार कर उसे प्रगतिशील बना देता है; परंतु युग साहित्यकार का निर्माण करता है। उसकी रचना युग की हर परिस्थितियों से प्रभावित रहती है। लेखिका अपने युग के प्रति जागरूक है इसलिए वह सर्जक साहित्यकार भी है। ऐसा जागरुक कथाकार अपने युग का वास्तविक प्रतिनिधित्व करता है। देशकाल की परिस्थितियाँ एवं प्रवृत्तियाँ उनके साहित्य में विद्यमान हैं जो उनका पहले उपन्यास 'कलि-कथा : वाया बाईपास' के संपूर्ण कथानक प्रस्तुत कथा लगभग डेढ़ सौ साल पहले से शुरू होकर सन् २००० ई. तक की सीमा अवधि में सिमटी हुई है। पूरे भारतवर्ष में अंग्रेज़ों का अधिपत्य था। उपन्यास में हरियाणा और राजस्थान से आई मारवाड़ी जाति की अस्मिता को उभारता यह उपन्यास किशोरबाबू की कथा व उनके आसपास के परिवेश के माध्यम से कई युगों की परिस्थितियों की कथा कह देता है। लालू, राबड़ी, सोनिया, ज्योति बसू और बहुराष्ट्रीय कंपनियों तक के रूप, इक्कीसवीं सदी के पर्यावरण, प्रदूषण, पेट्रोल खत्म होने पर मोटरों के बेकार होने, कल कारखानों के बंद होने आदि तक चर्चा मिलती है। उपन्यास की मुख्य पृष्ठभूमि में स्वाधीनता संघर्ष १९४३ का अकाल सांप्रदायिक हिंसा १९४२ में कोलकाता भिखमंगों का शहर बन गया, आदि प्रसंग गहरी संवेदना के साथ अंकित हुए हैं। साथ ही आधुनिक समाज में स्त्री की दशा एवं गरीबी को विशेष रूप से चित्रित किया है।

आज स्वतंत्रता के इतने वर्षों के बाद भी भारतीय समाज की स्थिति में कोई सुखद गुणात्मक परिवर्तन नहीं हुआ है। यही क्षोभ भरा विचार लेखिका अपने दूसरे और तीसरे उपन्यास में दर्शाती है। उपन्यास 'शेष कादम्बरी' में संयुक्त परिवार और पारिवारिक संबंधों में विक्षोभ के साथ-साथ विद्रोह और तनाव की स्थितियाँ बढ़ी हैं। रुबी दी और उनकी बेटियों के बीच, माँ-बेटियों का स्नेह कहीं भी देखने नहीं मिलता फिर भी रुबी दी उपन्यास के संपूर्ण कथानक में एक 'परिवार' बनाने के लिए तड़पती रहती है। यह रिश्तों की टूटन हर परिवार में है। विवाह ढाँचा चरमरा गया है। तलाक में बढ़ोत्तरी हुई है। इसका उदाहरण स्त्री चरित्र सविता का जीवन है। अलकाजी कहती हैं कि आज

जहाँ वृद्ध, उपेक्षित और असहाय है वहीं बालकों का भविष्य अनिश्चित और दुखद है। इस प्रकार लेखिका 'शेष कादम्बरी' द्वारा सामाजिक परिवेश को हर पहलू से उजागर करती है।

उपन्यास 'कोई बात नहीं' का परिवेश वर्तमान युग का शहरी परिवेश है। लेखिका ने इस उपन्यास में कोलकता का वह समाज प्रस्तुत किया है जो इस शहर निर्माण के वक्त तैयार हुआ था और आज भी वहीं की वहीं मौजूद है सिर्फ उसपर आधुनिकता की चादर ओढ़ी गई है। उपन्यास के 'सरहदें, बाड़े और चौहद्दियाँ यानी बाउंड्रिज' नामक शीर्षक में एक दिन शशांक अपनी कक्षा में प्रवेश करते समय गौर करता है कि उसके साथ में बैठने-पढ़ने वाले बंगाली, मारवाडी, पारसी, क्रिश्चियन और मुस्लिम लड़कों के क्लास में भी अपने-अपने मोहल्ले हैं। अलग-अलग धर्म वाले ये लड़के अपने ही धर्म जातिवाले लड़कों के साथ बैठते हैं।

शशांक गतिहीन-शब्दहीन एक विकलांग लड़का है। इसे शरीर और मन से सशक्त-सक्षम बनाने के लिए उसकी माँ, परिवार के बाहर का व्यक्ति 'जतिनदा' की मदद लेती है, जो समाज से जुड़ा है वह शशांक को बुरे समाज की, उसमें रहनेवाले इन्सानों की कथा, कहानी, जीवनी, आप-बीती सुनाकर उसकी मानसिक ताकत बढ़ाता है, ताकि वह शारीरिक-मानसिक रूप से विकसित हो, अर्थात् लेखिका एक पारिवारिक आपत्ति को सामाजिक आपत्ति के रूप में दिखाकर उसे मनुष्य जाति को सुलझाने के लिए प्रेरित करती है; जिसका प्रतिनिधित्व करता है पुरुष चरित्र जतिनदा जो सच में सामाजिक विचार चेता है।

'एक ब्रेक के बाद' उपन्यास सामाजिक यथार्थ की एक मूल्यवान रचना है। यह रचना उन तमाम लोगों पर एक सख्त टिप्पणी है, जिन्हें अपने आस-पास की सामाजिक विसंगतियाँ और विडंबनाएँ दिखाई देती हैं फिर भी वे अपने अस्तित्व को जगह देने की कोशिश में रहते हैं। जाहिर है 'एक ब्रेक के बाद' का समाज उत्तरआधुनिक, मल्टिप्लेक्स, कारपोरेट जीवन जी रहा है।

अलका सरावगी ने अपने कथा साहित्य में युग यथार्थ की पृष्ठभूमि में युग जीवन को विभिन्न कोणों, प्रसंगों तथा स्थितियों में देखा है। भिन्न आयामों का चित्र प्रस्तुत किया है। जिससे व्यक्ति अपने व्यक्ति रूप में तथा सामाजिक प्राणी के रूप में भी भीतर बाहर स्पष्ट हो उठता है। इनके साहित्य में व्यक्ति अपने व्यक्तित्व का धनी भी है और समाज व्यवस्था का अंग भी है।

आर्थिक परिवेश :–

सामाजिक विषमताओं ने भारतीय अर्थ-तंत्र को गहरे प्रभावित किया है। सत्य, अहिंसा, भाईचारा, सहयोग, प्रेम की भावना के ह्रास होने से सामाजिक जीवन में संकीर्णता, स्वार्थपरता, भ्रष्टाचार और बेईमानी में उत्तरोत्तर वृद्धि हुई है। पारंपरिक सामाजिक स्वरूप में बदलाव से आर्थिक परिदृश्य में भी बदलाव हुआ है। एक ओर परिवेश ने व्यक्ति को दुर्बल असहाय बनाया है, तो दूसरी ओर अधिकाधिक भौतिक सुख और सुविधा प्राप्त करने की मनोवृत्ति ने ऐसा जाल बिछाया कि प्रत्येक व्यक्ति को अपने तक सीमित रहकर जीवन जीने के अलावा कोई मार्ग दृष्टिगोचर नहीं होता। औद्योगिक क्रांति के दूरगामी परिणामों ने विश्व के परिदृश्य को समेटकर छोटा कर दिया है। बाजारीकरण और भूमंडलीकरण के कारण उपभोक्तावादी संस्कृति उत्तरोत्तर विकासमान है। इस उपभोक्तावादी बाजारवाद में गरीब, शोषित की स्थिति दयनीय है, साधन-संपन्न वर्ग समृद्ध तथा उद्योग धंधों में यंत्रों और उपकरणों की वृद्धि से सामान्य मनुष्य बेरोजगार हो रहा है। आर्थिक दुरव्यवस्था का प्रभाव पारिवारिक समीकरणों पर भी पड़ा है।

समाज के विभिन्न स्तरों पर होनेवाले आर्थिक शोषण के यथार्थ चित्र लेखिका के उपन्यासों, कहानियों में अनेक स्थानों पर विद्यमान है। 'कलि-कथा : वाया बाइपास' उपन्यास में एक मध्यवर्गीय परिवार की आर्थिक दशा के साथ-साथ कोलकता महानगर की आर्थिक परिस्थिति का भी बहुत सजीव चित्रण किया गया है। अलकाजी ने कोलकता महानगर का आर्थिक परिवेश उजागर करते हुए कथा में 'छपनिया के अकाल' के विषय में बताया है– ''लोगों ने भूख के मारे कच्चा बाजरा या चना ही फांक लिया। अपने बच्चे तक बेच डाले।

कई जगह लाशों की कमर में अंटी में सिक्के बंधे हुए मिले। अनाज इतना महँगा हो गया था कि उसे खरीदने के लिए उन पैसों को खर्च कर देने के बजाय लोगों ने मौत को चुना। इतना मोल है पैसे का। कितने कष्ट से आता है पैसा। उसे यों ही कैसे गंवा दिया जाए?''

किशोरबाबू पूर्वदीप्ति शैली द्वारा बताते हैं, कि अंग्रेजो ने भारत को अंदर ही अंदर खोखला बनाकर रख दिया। सन् १९४३ के अभूतपूर्व अकाल ने कोलकता की कमर तोड़कर रख दी, ''आर्थिक राजधानी होते हुए भी कोलकता को भिखमंगों का शहर कहा गया क्योंकि ये सारे भिखमंगे अंग्रेजों ने बनाए हैं।''

किशोरबाबू अपने पाँच पीढ़ियों के परिवार का आर्थिक परिवेश बताते रहते हुए अपने बेटे को कहते हैं, 'मारवाडी लोगों ने आज तक एक पैसा कर्ज लिया नहीं, किश्त की खरीदारी वह भी चैनबाजी के लिए।' घमंडीलाल हेमिल्टन की मदद से और मैत्री के आधार पर कलकत्ते में अपना व्यापार विकसित करते हैं, और बाद में पुत्र रामविलास ने उनकी गद्दी और प्रतिष्ठा को और भी आगे बढ़ाया था, जिसका लाभ उनके बेटे केदारनाथ ने नहीं उठाया, वे पिता से विद्रोह करके भीवाणी वापस चले गए, जहाँ रामविलास ने तीन चौक की हवेली बनवाई थी लेकिन, बाद में बुरी संगत में पड़कर रामविलास जी ने फाटकाबाजी शुरू कर दी थी जिससे सारी संपत्ति चौपट हो गई, और हवेली भी सस्ते दामों में बिक जाती है तब केदारनाथ के बेटे और किशोरबाबू के पिता भूरामल ने कलकत्ते में पैर जमाने का असफल प्रयत्न किया था। भूरामल की मृत्यु के पश्चात् अपनी पारिवारिक मर्यादाओं में बंधे, मातृभक्त किशोर मैट्रिक के तुरंत बाद ही शादी के बंधन में बांध दिए जाते हैं और पारिवारिक दायित्वों को निभाने के लिए एक सामान्य व्यापारी का जीवन बिताने लगते हैं लेकिन बेटा है कि उत्तरआधुनिकता के कारण किश्त पर गाड़ी लेता है, कर्जा लेकर जीवन को सम्पन्नता से व्यतीत करता है।

उपन्यास 'शेष कादम्बरी' में नायिका रुबी दी के माता-पिता का घर संपन्न परिवार था, लेकिन ससुराल में रुबी दी के पति कमाते तभी घर का खर्च चलता। रुबी दी के मायके की संपन्नता देख ससुराल वाले उन्हें सतपीढ़िया शाह परिवार की कहते। बात-बात पर ताने मारते ? अपने माता-पिता के घर संपन्नता में बिताया जीवन भूल रुबी दी भी सुधीर पति के साथ रूखी-सूखी के साथ गुजारा करती है।

'शेष कादम्बरी' उपन्यास कथा में रुबी दी को हर बार मनोरंजन व्यापारी अपनी आर्थिक कठिनाई दूर करने के लिए किसी भी प्रकार का काम करते दिखता है जैसे 'पाव-भाजीवाली गाड़ी लिए घूमता है, गैस सिलेंडर की डिलीवरी देना, रिक्शा खींचना, अपर्णा बनर्जी समाजसेविका के घर गाड़ीचालक है।'

रूबीदी इसी मनोरंजन व्यापारी के 'चाट-पत्ते' दुकान की भीड़ देख सोचती है, 'सड़क पर चाट-पत्ते खाना वाकई अमीर-गरीब के फर्क को मिटा डालता है।''[१] रुबी दी सड़कों पर भागते मोटरों को देख सोचती है, ''अब तरह-तरह की नई चमचमाती गाड़ियों के कारण पता चलता है लोगों के पास कितना पैसा बढ़ गया पहले मारवाड़ियों में कहावत चलती थी कि फलाना पहले महायुद्ध का अमीर है, कि फलाना दूसरे महायुद्ध का अमीर है। पर आजादी के बाद तो न जाने कितने नौदौलतिए बनते चले गए और सदी के अंतिम दस सालों में तो अब समझना नामुमकिन है कि किसके पास कितना पैसा कहाँ से आ रहा है। हर तरफ गाड़ियाँ हैं, एक से एक नई चमचमाती।''[१]

'कोई बात नहीं' उपन्यास कथा में जिस परिवार की कथा है, वह संपन्न परिवार है लेकिन दादी का अतीत का वर्णन आर्थिक कठिनाई दर्शाता है। शशांक का मित्र आर्थर का जीवन उसकी आर्थिक बेहाली प्रस्तुत करता है। उपन्यास कथा में बहुत सारे ऐसे पात्र बीच-बीच में आते हैं अपनी आर्थिक दुविधा प्रस्तुत करते हुए।

'एक ब्रेक के बाद' उपन्यास का परिवेश इक्कीसवीं सदी से पूर्णत: प्रभावित परिवेश है। यह दौर दुनिया के साथ-साथ भारत के आर्थिक सर्वांगीण परिवर्तन का दौर है। कथा में आर्थिक परिवेश दर्शाता के.वी.का वाक्य जाहिर करता है कि आधुनिक समाज में आर्थिक कठिनाई कैसे बनी है, ''भारत में बेरोजगारी इस कदर बढ़ रही है कि अब अधिकांश मजदूर भी भारत के बजाय विदेशों में जाकर मजदूरी

करना बेहतर समझते हैं क्योंकि वहाँ उन्हें उनके हिसाब से अधिक पारिश्रमिक मिलता है। ''अमेरिका के लोगों के लिए बच्चों का सस्ता होमवर्क, सस्ती मजदूरी और अब सस्ती प्रार्थना करने के लिए भी इंडिया हाजिर है।''[२]

'एक ब्रेक के बाद' में तीन प्रमुख पुरुष पात्र हैं के.वी. रिटायर होने के उम्र में शहर के सबसे अधिक पैसा कमाने वाले 'मार्केटिंग कंसल्टेन्ट' हैं। भट्ट एक होशियार व्यक्ति होते हुए भी नौकरियाँ छोड़ शहर-शहर घुमता है पिता के भरोसे। गुरुचरण राय का खर्चा तो मित्रों की मदद से चलता है, फिर भी उसका कहना है, ''सुविधाओं के लिए पैसा जरूरी होता है, इस अर्थ में पैसा सुविधा भी है, आनंद भी है।''[३]

अर्थात अलका सरावगी ने अपने चारों उपन्यासों के माध्यम से भारत देश की आर्थिक स्थिती क्या थी, वर्तमान में कैसी है, भविष्य में क्या होगी ? इनके बहुत वर्णनात्मक उदाहरण देते हुए खूबसूरती से प्रस्तुत किया है।

राजकीय परिवेश :–

अलका सरावगी के उपन्यासों में राजकीय परिवेश कुछ पात्रों ने निर्माण किया है अथवा अलकाजी खुद इतिहास की राजकीय घटनाओं को अपने कथा में पात्रों के साथ जोड़ती है एक प्रश्न के जवाब में अलका जी कहती हैं, ''आज भी गाँधीवाद एवं क्रांतिकारी विचार युग है।''[१] जो लेखिका की रचनाओं में दिखता है। इससे जाहिर है अलकाजी गाँधीवादी प्रबल विचारों से अपना लेखन करती है। इनके पहले उपन्यास, 'कलि-कथा : वाया बाइपास' में गाँधीवादी वृत्ति, समाज सुधारकों का समर्थन मिलता है। कलि-कथा : वाया बाइपास १९४०', 'नाइन्टीन फोर्टी टू : अ लव स्टोरी ?', 'आजादी के छाव में', 'हिजडे और पार्टीशन : उन्नीस सौ सैंतालीस', 'समवेयर इन द नार्थ', '७ नवंबर, प्रसन्न कुमार टैगोर स्ट्रीट' इन शीर्षकों में तत्कालीन राजनीति के क्रांतिकारी पक्ष को भी सम्मानपूर्वक स्थान प्राप्त हुआ है। रोचकता बनाए रखने के लिए लेखिका ने अनेक दिलचस्प किस्से पेश किए हैं।

अलकाजी ने 'कलि-कथा : वाया बाइपास' में अनेक ऐतिहासिक कालखण्डों को प्रस्तुत किया है। लॉर्ड कर्जन (१९०६) द्वारा किए गए बंगाल के विभाजन की घटना और उसके विरुद्ध होनेवाले उत्पादों का उल्लेख है। पहले विश्वयुद्ध की चर्चा है, जिसमें व्यापारियों ने खूब समृद्धि प्राप्त की रामविलास इसी समृद्धि के कारण अपनी हवेली बनवा पाए। १९३९ में प्रान्तीय असैम्बली से इस्तीफा देकर व्यक्तिगत सत्याग्रह में शामिल होने की कॉग्रेस की राजनीति की विस्तृत चर्चा की गयी है। जापानियों के आक्रमणों और हमलों के खतरे तथा अनाज संचय के कारण होनेवाले अकाल का वर्णन और भी अधिक विस्तार से चित्रित किया गया है। १६ अगस्त १९४६ में मुस्लिम लींग और जिन्ना के 'डाइरेक्ट एक्शन' के ऐलान के कारण हुए हिन्दू मुस्लिम दंगों की भयंकरता का विशद चित्रण, 'द ग्रेट किलिंग' में प्रस्तुत है। महात्मा गाँधी के बंगाल जाकर शान्ति स्थापित करने के प्रयत्नों का भी जिक्र है। देश विभाजन, पाकिस्तान-निर्माण और हिन्दू मुस्लिम मारकाट पर भी लेखिका ने बड़ी कुशलता के साथ मानवीय नीचता का चित्र उकेरा है।

उपन्यास 'शेष कादम्बरी' में रुबी दी के देवीदत्त मामाजी का संबंध राजनीति से है; लेकिन वे कोई राजनेता नहीं हैं, बल्कि उन्होंने राजनीति को 'रंडी की मंडी' कहा है। 'एक शताब्दी की खोज : वाया एक अदद आदमी' शीर्षक में लेखिका ने देवीदत्ता मामा को महात्मा गाँधी, पंडित नेहरू के पीछे घूमने वाले उन लोगों का हिस्सा बनाया है जिनमें देवीदत्त, मामा का फोटो कभी दिखा नहीं। 'एक अदृश्य आदमी' शीर्षक में दिखाया गया है कि देवीदत्त मामा ऐतिहासिक राजनीतिक हर हलचलों में मौजूद है, दिखाया है।

उपन्यास 'कोई बात नहीं' में राजकीय परिवेश कही भी दर्शाया नहीं है लेकिन, दादी पूर्वदीप्ति शैली से शशांक को बताती हैं– ''चीन से लड़ाई हुई न, तब नेहरू जी के लिए मैंने भी दो सोने की चूड़ियाँ भेजी। देश के लिए उस समय लोगों ने अपने नौलखे हार तक नेहरूजी की झोली में डाल दिए थे देश को बचाने के लिए।''[१] शशांक अपनी दादी से पूछता है चूड़ियाँ खुद तुमने दी थीं ? दादी ने कहा

''अरे नहीं बेटा, न मैं खुद जा सकती थी और न तेरे दादाजी को दे आने के लिए कह सकती थी। व्यापारी आदमी को देश के लिए सोने का दान समझ में क्या जाने आता कि नहीं।''[२] अर्थात् लेखिका कहना चाहती है, एक व्यापारी होते हुए मारवाड़ी राजनीति बुद्धि रखता है।

अलकाजी उपन्यास 'एक ब्रेक के बाद' में राजकीय परिवेश में दर्शाती है, आज विश्व व्यापार ने राजनीति को बहुत अधिक प्रभावित किया है। ''दुनिया में अब देशों की सीमाएँ ही बेमतलब हो गई हैं। कम्प्यूटर की 'साइबर-वास्तविकता क्या किसी हद से बँध सकती है? अब तो दुनिया का शासन दुनिया के बड़े कॉरपोरेशन चला रहे हैं। सरकारें और पार्टियाँ तो बस ऊपरी ढाँचे हैं। कोई कंपनी मैक्सिको में फैक्ट्री खोले या चीन या नाइजीरिया में के.वी. को अगर लगा कि वहाँ कुछ करके दिखाने का मौका है, वे चले जाएँगे।''[३]

विदेशी कंपनियाँ भारत में आकर कंपनी लगाने व्यापार करने को ललायित हैं। हमारी सरकार प्रशासन, पार्लियामेंट तथा पुलिस भी भारत के मजदूरों के विषय में कम इन विदेशी पूँजीपतियों के बारे में अधिक सोचती है। विदेशी पूँजीपतियों को खुश करने तथा लुभाने के लिए वह हर तरह के उपाय अपनाती है, चाहे वह भारतीय श्रमिकों का शोषण, अत्याचार क्यों न हो। बहुराष्ट्रीय कंपनियों तथा विदेशी पूँजीपतियों ने आज देश के हर एक क्षेत्र को भली-भाँति प्रभावित किया गया है। यह प्रभाव उत्तरभारत की अपेक्षा दक्षिण भारत में अधिक देखा जा सकता है।

अंत में अलका सरावगी हमें अपने रचनाओं के माध्यम से निम्नलिखित बातें याद दिलाना और बताना चाहती हैं। आज के राजनीतिक और समाजसुधारक समाज के लिए एक प्रश्नचिन्ह है। जब तक देश की मेधा के साथ जन-सामान्य एक जुट होकर इन समस्या उत्पन्न करनेवाले लोगों के विरुद्ध कार्यवाही नहीं करेंगे तब तक हमारे विचार से आज की समस्त सामाजिक समस्याओं का निराकरण संभव नहीं है।

सांस्कृतिक परिवेश :–

''संस्कृति के बिना न तो अकेले व्यक्ति को न विशेष सामाजिक समूह को और न सम्पूर्ण समाज को ही समझा जा सकता है। यह संस्कृति ही है जो विश्व के विस्तृत केन्द्र बिंदु में समूह को समूह से समाज को समूह से तथा समाज को समाज से पृथक कराती है। यह संस्कृति ही है जो हमको एक सामाजिक प्राणी के रूप में अन्य पशुओं से जिनमें हम सब से बहुत समान उच्चतर श्रेणी के मनुष्य भी है, पृथक करती हैं।''[१]

अलका सरावगी के रचनाओं में कोलकता के बंगालियों की संस्कृति के साथ मारवाड़ियों की संस्कृति के रंग देखने को मिलते हैं। इन दो संस्कृतियों में संपूर्ण भारत देश की मिश्रित संस्कृतियाँ आकर मिल गई हैं। इन्हीं की पहचान लेखिका उपन्यास, कहानी के पात्रों द्वारा प्रस्तुत करती हैं।

कोलकता विश्वविद्यालय पूर्व हिन्दी विभाग अध्यक्ष शंभुनाथ जी कहते हैं– ''कोलकता शहर सौंदर्य से भरा है, जहाँ सौंदर्य है वहाँ संस्कृति तो रहेगी और उसका भी सौंदर्य विविध रंगों में होगा बल्कि है, कोलकता शहर के सड़कों पर बड़ी संख्या में बिहारी मोरिहा, कुली, मजदूर हैं। वैश्वीकरण की मार से कई मिलों-कारखानों के बंद होने के बाद विभिन्न प्रदेशों से आए हिन्दी भाषी श्रमजीवी अब अप्रत्यक्ष शरणार्थी हैं। कोलकाता को 'मिनी इंडिया' कहा जाता है। जहाँ बहुत सी जातियों, धर्मों और भाषाओं के लोग आपस में प्रेम और सद्भाव के साथ रहते हैं।''[२]

१७७६ में ईस्ट इंडिया कंपनी के शासन का केन्द्र कोलकता हुआ। रोजगार और व्यवसाय का आकर्षण हिन्दी पट्टी के लोगों को बंगाल मुख्यत: कोलकाता ले आया। राजस्थान से आए व्यापारियों ने यहाँ बड़े पैमाने पर उद्योग धंधे फैलाए, आलीशान मकान बनाए उन्होंने अपना व्यापार काफी बढ़ा लिया।''[३]

शंभुनाथ जी ने जैसे कहाँ कोलकाता में विविध संस्कृति के रंग देखने मिलेंगे, और राजस्थान से मारवाड़ी अपनी रोजी-रोटी कमाने आए और इस कदर बस गए की उन्होंने अपनी आलीशान हवेलियाँ, मकान बनाए यह बात सौ प्रतिशत सही है, जो अलकाजी भी यही सत्य अपने पहले उपन्यास, 'कलि-कथा : वाया बाइपास' द्वारा उजागर करती है जो कुछ मारवाड़ी सिर्फ चार पैसे कमाने के आशा में आए और कोलकाता के सांस्कृतिक रंग में रंग गए। इस उपन्यास के प्रमुख चरित्र रामविलास अपनी मारवाड़ी संस्कृति को नहीं भूले लेकिन बंगालियों के संस्कृति में जीवन व्यतीत करना ही उन्हें सुहाता है कारण कोलकता की सबसे महत्त्वपूर्ण संस्कृति की निशानी 'गंगा नदी' रामविलास के पिता ने मरने से पहले कहा था, यदि निर्वासन में जाना हो तो कोलकाता ही जाना क्योंकि वहाँ गंगा है। कहीं रहना है तो कोलकाता में रहना क्योंकि वहाँ दोनों वक्त गंगा जल से सड़कें धुलाई जाती हैं।'

कोलकता की संस्कृति को वैशिष्ट बताते हुए लेखिका कहती है– ''यहाँ के मारवाड़ियों ने अपने रीती-रिवाजों को बनाए रखते हुए भी डेढ़ सौ सालों में अपने को काफी हद तक बंगाली बना लिया है। उन्हें बांग्ला में बात करते देख कोई कह नहीं सकता कि वे बंगाली नहीं हैं।''[१] उपन्यास 'शेष कादम्बरी' की रुबी दी अपने ससुराल वाले मारवाड़ी होते हुए कैसे बंगाली संस्कृति को अपनाया है बताती हैं, ''मेरा ससुराल नाम का ही मारवाड़ी था कारण, पति सुधीर को बंगालियों की सी सज-धज में निखालिस बांग्ला बोलते देख कोई सोच भी नहीं सकता था कि वे बंगाली नहीं होंगे। भवानीपुर के बंगाली पाडे में रहते-रहते उनका परिवार कई पीढ़ियों पहले ही बंगाली भाषा, खान-पान, सम्पूर्ण संस्कृति अपना चुका था। अपने पिता, बड़े भाई सबसे सुधीर बांग्ला में ही बात करते। पिता को कहते बाबा, बड़े भाई को बौडोदादा या बौड़दा। बंगालियों की तरह काँसे की थाली में खाते। आए दिन बनता - कुरेला, भाजा, पटल (परवल), बैगनी, चड़चड़ी (सरसों के तेल में भूने हुए हरे पत्ते), केले के फूल का साग, ऐसी-ऐसी सब्जियाँ जो सिर्फ बंगालियों में ही बनती है। कटहल भी कोई खाने की चीज है, सुबह-सुबह भला कोई नाश्ते में मूड़ी खाता है, रूबी को लगता यह 'सुकतो' तली हुई सब्जियों का झमेला, जब देखो तब सन्देश, रसगुल्ला, मिष्टी दही और पान्तुआ जैसी मिठाइयाँ। सुधीर का पीढ़ी दर पीढ़ी बंगालीकरण हुआ था। ऊपर से बंगाल इंजीनियरिंग कॉलेज में पढ़ाई ने कोई कोर-कसर नहीं रहने दी थी। यहाँ तक कि बंगालियों की तरह ही सुधीर ने शादी भी उन्तीस साल की उम्र में की जिस उम्र में हिन्दी भाषी समाज में बच्चे पैदा करके स्कूल भेजे जाने लगते हैं।''[१]

'कलि-कथा : वाया बाईपास' में अलकाजी कहती हैं, ''दो संस्कृतियाँ एक मरुभूमि की रेतीली बालू से आई हुई, दूसरी बंगाल की शस्य-श्यामला धरती पर पनपी हुई। इस धरती ने इन्हें भी ठौर दिया है– दूर मरुभूमि के बाशिंदों को, लेकिन उनकी अपनी हजारों साल पीछे जानेवाली जड़े हैं। वे उन जड़ों को कभी नहीं उखाड़ते। इनका समाज जैसे चौबीस घंटे जागनेवाली जड़े हैं। एक अदृश्य आँख है जो नियमों का उल्लंघन करनेवाले से सख्ती से पेश आती है। उसके नियमों से लगे बंधे ये चलते हैं, लेकिन इस धरती की संस्कृति को भी अपने अंदर समाने देते हैं।''[२]

उपन्यास 'कोई बात नहीं' में शशांक की दादी संस्कृति, परंपरा से जुड़ी नजर आती है क्योंकि लोककथाएँ - लोकगीत अपने देश की सांस्कृतिक देन है। दादी इन्हीं लोककथाओं के माध्यम से भारतीय संस्कृति को उजागर करती है। इन्सान की फितरत, जोतकी, भंडारी-घाघ की कहानी वह सुनाती है। लोकगीत भी संस्कृति का ही अंग है। अलकाजी के सभी उपन्यासों में लोकगीत मौजूद है। अर्थात् लेखिका के सभी उपन्यास भारतीय संस्कृति का आदर्श प्रस्तुत करते हैं। 'कोई बात नहीं' उपन्यास में दादी संस्कृति से जुड़े सुविचार बताती है, 'पहला सुख निरोगी काया, दूजा सुख घर में माया।''[३]

'एक ब्रेक के बाद' उपन्यास में के.वी.शंकर अय्यर अपनी 'षष्टि पूर्ति' ब्राह्मणों के मंत्रोच्चार से मनाते हैं। उस दिन पूजा-पाठ करते हैं। के.वी. चेन्नई के तमिल ब्राह्मण है। अपने ब्राह्मणत्व संस्कृति के साथ भूत, वर्तमान और भविष्यकाल में विचरण करते नजर आते है। के.वी. दक्षिण भारत के ब्राह्मण होते हुए अपना पहनावा इस तरह रखते हैं कि इसका अंदाजा कोई आसानी से नहीं कर सकता कारण

उन्होंने अपने माथे पर विभूति की तीन लाइनें या चंदन का टीका भी लगाना छोड़ दिया है। इनके बड़े भाई लोग डॉक्टर, चेयरमेन, नामी पत्रकार हैं फिर भी इस पहचान से मुक्त नहीं हो पाए हैं। के.वी.धर्म, जनेऊ कट्टर ब्राह्मणत्व विचारोंवाले पिता सबसे पीछा छुड़ा चुके हैं। यहाँ अलकाजी कहती है, ''पर शायद आदमी सब कुछ छोड़कर भी असली चीज छोड़ नहीं पाता। खाली ऊपरी खोल ही बदलता है। अंदर वह वैसी ही चालाकियाँ करता रहता है जो उसकी जन्मजात संस्कृति होती है।''[१] के.वी. एक ब्राह्मण है चोला बदलकर भी वह ब्राह्मण खी तरह ज्ञान बघारने का लोभ छोड़ नहीं पाता, क्योंकि अपनी पत्नी के खर्राटे सुन कहता है, ''शुद्र आदतें मरती नहीं हैं।''[२] इस प्रकार के.वी अपने तमिल संस्कृति को बात-बात में बताते हैं। कथा में के.वी. संस्कृति के विषय में सोचते हैं, ''अब दुनिया भर में लोगों की सहनशीलता कम से कमतर होती जा रही हैं और लोग धीरे-धीरे आनेवाले समय में अपने ही कपड़े पहनने वाले भाषा बोलनेवाले, अपने ही रंग जाति और धर्म के लोगों के मोहल्लों में रहना पसंद करेंगे।''[३]

यहाँ अलका सरावगी ने संकेत दिया है कि संस्कृति में उत्तरआधुनिकता आ गई है।

अलका सरावगी अपने पहले तीन उपन्यासों में कोलकाता शहर में बसे विविध संस्कृतियों के बेजोड़ उदाहरण देती है। चौथे उपन्यास में कोलकाता संस्कृति के साथ दक्षिण भारत के ब्राह्मणों की संस्कृति के चित्र बहुत खूबसूरती से खीचे हैं। अर्थात् अलकाजी की रचनाओं में बंगाली, मारवाड़ी, अंग्रेजी, दक्षिण भारतीय, उत्तर आधुनिक प्रकारों की संस्कृतियाँ पढ़ने मिलती हैं। लेखिका की रचनाएँ भारतीय संस्कृति की मूल प्रवृत्तियों से परिपूर्ण है और उनमें मानवता के सफल जीवन की संस्कृति संपन्न व्याख्या है

निष्कर्ष – अलका सरावगी का उपन्यास जगत बहुत रोचक उद्देश्य परक, किस्सा प्रधान है जो पाठकों को हर समय स्वयं से बांधे रखता है। इनके उपन्यासों एवं कहानियों में सामाजिक, पारिवारिक, आर्थिक, राजकीय, सांस्कृतिक परिवेश को इतिहास- वर्तमान जगत के परिप्रेक्ष्य में दर्शाया गया है तथा इस बात पर विशेष बल डाला गया है कि इस संसार में परिवर्तन को छोड़कर सब वुन्छ परिवर्तनशील है। समय के साथ-साथ परिवेश भी बदलते रहते हैं।

ग्रंथ सूची

१. नई कहानी की भूमिका - कमलेश्वर, शब्द प्रकाशन दिल्ली १९७८
२. साठोत्तरी हिन्दी कहानी - डॉ. विजय द्विवेदी, प्रभा प्रकाशन, १९८४
३. नई कहानी दशा-दिशा और संभावना - श्री सुरेन्द्र, अपोलो पब्लिकेशन, जयपुर १९६६
४. स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कहानी में मानव - डॉ. हेतु, पंचशील, जयपुर १९८३
५. हिन्दी कहानी सातवां दशक - पल्हाद अग्रवाल, मैकमिलन कं.ऑ. इंडीया १९७८
६. समकालीन हिन्दी कहानी और समाजवादी चेतना - डॉ. किरण, अनुभव प्रकाशन कानपुर १९८२
७. हिन्दी उपन्यास समकालीन विमर्श - डॉ. सत्यदेव त्रिपाठी अमन प्रकाशन रामबाग २०००
८. आधुनिक हिन्दी उपन्यास व्यक्तित्व विघटन के निकष पर - डॉ. नीरज जैन, निर्मल पब्लिकेशन दिल्ली, २००१